विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 28 नवंबर 2020

वर्ग सप्तम शक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

जगद्गुरुः शङ्कराचार्यः

एकदा शङ्करः नधां स्नातुं गतः ।

एक बार शंकराचार्य नदी में स्नान करने के लिए गए।

तत्र नक्रेण ग्रहीतः सः उच्चैः आक्रोशत् ।

सोना एक मगरमच्छ ने उनको पकड़ा लिया। वे जोर से चिल्लाए।

आक्रोशम् श्रुत्वा माता नदीतीरं गता पुत्रं च नक्रेण ग्रीहीतम् अपश्यत् ।

चिल्लाहट को सुनकर माता नदी के किनारे गई और पुत्र को मगरमच्छ के द्वारा पकड़ा हुआ देखा ।

शङ्कर अवदत्- अम्ब !

शंकराचार्य बोले-माँ !

यदि संन्यासं ग्रहीतुं माम् अनुमंस्यते तर्हि अहं नक्रात् मुक्तो भविष्यामि ।

यदि तुम्हें सन्यासी बनने का आदेश आज्ञा दे दोगी तो मैं मगरमच्छ से मुक्त हो जाऊँगा ।

“वत्स ! यथा तुभ्यं रोचते तथा कुरू “

“पुत्र ! जो तुमको अच्छा लगता है वही करो ।